ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 3 | March 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i3.117

डिजिटल मीडिया के प्रभाव से सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन

डॉ. लखविंदर सिंह

प्राचार्य, गुरु हरगोबिंद साहिब कॉलेज ऑफ एजुकेशन, 12 बीबी (पदमपुर), जिला श्री गंगानगर (राज.)

E-Mail id: lsbrar72@gmail.com

शोध सार:

डिजिटल मीडिया ने हमारे सामाजिक व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, जिससे समाज का प्रत्येक पहलू प्रभावित हुआ है। यह परिवर्तन दोनों ही प्रकार से है—सकारात्मक और नकारात्मक। एक ओर, डिजिटल मीडिया ने वैश्विक संवाद और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया है। इससे लोग आसानी से विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त कर पा रहे हैं और वैश्विक आंदोलनों का हिस्सा बन रहे हैं। सोशल मीडिया ने जानकारी के आदान-प्रदान को त्वरित और व्यापक बनाया है, जिससे लोगों में शिक्षा, स्वास्थ्य, और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर जागरूकता आई है।

तकनीकी शब्द: *डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया, वर्चुअल, सामाजिक मूल्य, सामाजिक व्यवहार*

प्रस्तावना

वर्तमान युग को यदि "डिजिटल युग" कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। आज व्यक्ति के दैनिक जीवन से लेकर उसके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक व्यवहार तक, सब कुछ डिजिटल मीडिया के प्रभाव में आ चुका है। जिस तरह से डिजिटल मीडिया ने हमारे जीवन में प्रवेश किया है, वह केवल एक तकनीकी परिवर्तन नहीं, बल्कि एक गहरा सामाजिक परिवर्तन भी है। इसने न केवल हमारे संवाद के साधनों को बदला है, बल्कि हमारी सोच, संस्कृति, रिश्तों और सामाजिक व्यवहार की संरचना को भी पुनः परिभाषित किया है।

डिजिटल माध्यमों के माध्यम से जानकारी का आदान-प्रदान, विचारों की अभिव्यक्ति, और सामाजिक सहभागिता अत्यंत तीव्र, व्यापक और प्रभावी हो गई है। पारंपरिक मीडिया की एकपक्षीय प्रकृति की तुलना में डिजिटल मीडिया ने आम नागरिकों को एक सक्रिय निर्माता और सहभागिता करने वाले के रूप में परिवर्तित कर दिया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ब्लॉग्स, व्हाट्सऐप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म्स ने न केवल व्यक्तिगत जीवन में बदलाव लाया है, बल्कि उन्होंने सामाजिक संबंधों, सामूहिक चेतना और सामूहिक क्रियाओं की संरचना को भी नई दिशा दी है।

इस भूमिका में हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि डिजिटल मीडिया के प्रभाव से कैसे सामाजिक व्यवहार में सूक्ष्म से लेकर व्यापक स्तर तक परिवर्तन आया है, और यह परिवर्तन हमारे सामाजिक ताने-बाने को किस प्रकार से नया स्वरूप दे रहा है [1]

डिजिटल मीडिया की अवधारणा

डिजिटल मीडिया का तात्पर्य उन सभी माध्यमों से है, जो इंटरनेट और अन्य डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए जानकारी के निर्माण, वितरण और उपभोग की प्रक्रिया को आसान और त्वरित बनाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य इंटरनेट और अन्य इलेक्ट्रॉनिक तकनीकों के माध्यम से जानकारी का आदान-प्रदान करना है। इस प्रकार के मीडिया में सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स, वेबसाइट्स, ब्लॉग्स, मोबाइल एप्लिकेशन्स, और वीडियो-शेयरिंग साइट्स जैसे यूट्यूब इत्यादि शामिल हैं। इन माध्यमों के द्वारा व्यक्ति, समुदाय, और संस्थान एक दूसरे से जुड़ सकते हैं और आपस में संवाद स्थापित कर सकते हैं।

डिजिटल मीडिया पारंपरिक संवाद के तरीकों से पूरी तरह से भिन्न है। पारंपरिक संवाद साधन जैसे पत्राचार, प्रत्यक्ष मुलाकात, और मुद्रित समाचार पत्र, जहाँ सूचना का वितरण धीमा और एकतरफा होता था, वहीं डिजिटल मीडिया में संप्रेषण की गति अत्यधिक तेज होती है और यह द्विदिशात्मक (two-way communication) होता है। उदाहरण स्वरूप, एक व्यक्ति न केवल जानकारी प्राप्त कर सकता है, बल्कि उस जानकारी पर अपनी प्रतिक्रिया भी दे सकता है। इसके अलावा, डिजिटल मीडिया का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह सार्वजनिक होता है, यानी कोई भी व्यक्ति किसी भी समय, किसी भी स्थान से सूचना का आदान-प्रदान कर सकता है।

इस प्रकार, डिजिटल मीडिया ने संप्रेषण और सूचना के प्रसार के पारंपरिक तरीकों को पूरी तरह से बदलकर उन्हें अधिक प्रभावी, सुलभ और गतिशील बना दिया है। इसे लेकर *लोगों की भागीदारी में भी*

बदलाव आया है, क्योंकि अब कोई भी व्यक्ति आसानी से अपने विचार और जानकारी साझा कर सकता है, जिससे लोकतांत्रिक संवाद को भी नया दिशा प्राप्त हुआ है [2]।

सामाजिक संबंधों में परिवर्तन

डिजिटल मीडिया ने निश्चित रूप से लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करने का एक नया रास्ता खोला है। पहले जहाँ व्यक्तिगत मुलाकातों, पत्राचार, और फोन कॉल्स के माध्यम से रिश्तों को निभाया जाता था, वहीं अब सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से लोगों का संवाद अधिक सुलभ और त्वरित हो गया है। 'लाइक' और 'कमेंट' जैसी सुविधाओं ने संबंधों को सरल और तुरंत प्रतिक्रिया योग्य बना दिया है। हालांकि, इस परिवर्तन ने रिश्तों की प्रकृति में भी बदलाव लाया है। जहां पहले रिश्तों को निभाने के लिए समय, ऊर्जा और भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता होती थी, अब डिजिटल माध्यमों के कारण यह सभी तत्व प्रभावित हुए हैं।

डिजिटल मीडिया ने पारंपरिक संबंधों की आत्मीयता को प्रभावित किया है। जहां एक समय रिश्ते गहरे होते थे और उनकी बुनियाद भरोसे और समझ पर होती थी, अब वही रिश्ते कई बार सतही हो गए हैं। लोग केवल ऑनलाइन उपस्थिति के माध्यम से अपने संबंधों को बनाए रखते हैं, लेकिन यह किसी वास्तविक भावनात्मक संबंध के समान गहरा नहीं होता। परिणामस्वरूप, *सतहीपन का अहसास बढ़ा है और रिश्तों की गहराई में कमी आई है [3]।*

संचार शैली में बदलाव

डिजिटल मीडिया ने संचार की शैली में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है, जिसे सबसे स्पष्ट रूप से संक्षिप्तता और प्रतीकात्मकता के रूप में देखा जा सकता है। आजकल, इमोजी, शॉर्टकट्स, वॉयस नोट्स, और स्टिकर्स जैसे साधन बहुत ही सामान्य हो गए हैं, जो भाषा को संक्षिप्त और प्रतीकात्मक रूप में बदलते हैं। ये साधन संदेशों को तेज़ी से व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाते हैं, लेकिन इसका एक नकारात्मक पक्ष यह है कि ये पारंपरिक भाषाई विविधता को सीमित करते हैं।

जब लोग 'हैप्पी' या 'सैड' के लिए इमोजी का उपयोग करते हैं या शब्दों को शॉर्टकट्स के रूप में लिखते हैं, तो भावनाओं का वास्तविक अर्थ और गहराई बहुत हद तक खो जाता है। इन साधनों के माध्यम से संचार तीव्र तो हो सकता है, लेकिन भावनात्मक गहराई में कमी आती है। इसलिए, जबकि *डिजिटल संवाद त्वरित और सुविधाजनक बन गया है, उसकी भावनात्मक और साक्षात् गहराई कम हो गई है [4]।*

युवा वर्ग पर प्रभाव

डिजिटल मीडिया ने विशेष रूप से युवा वर्ग पर गहरा प्रभाव डाला है, क्योंकि यह उनकी दिनचर्या, सोच, और सामाजिक व्यवहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। युवा वर्ग डिजिटल मीडिया का सबसे सक्रिय उपयोगकर्ता है, और यह उनके व्यक्तित्व, भाषा, विचारधारा, और मूल्य प्रणाली को प्रभावित कर रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स जैसे इंस्टाग्राम, टिकटॉक, और ट्विटर पर सक्रियता के कारण उनकी पहचान और स्वीकृति का एक बड़ा हिस्सा इन प्लेटफार्म्स पर आधारित हो गया है।

उदाहरण के लिए, इंस्टाग्राम या टिकटॉक जैसे प्लेटफार्मों पर वर्चस्व की होड़ ने आत्म-मूल्यांकन की प्रक्रिया को बाहरी अनुमोदन और 'लाइक्स' तथा 'फॉलोवर्स' पर केंद्रित कर दिया है। अब युवा अपने आत्म-मूल्य को अन्य लोगों की प्रतिक्रियाओं, टिप्पणियों, और 'लाइक' के आधार पर आंकने लगे हैं। इसने आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान के पारंपरिक तरीके को प्रभावित किया है, जिससे मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक संतुलन में बदलाव हो सकता है। इस प्रकार, *डिजिटल मीडिया युवा वर्ग को बाहरी अनुमोदन की ओर धकेल रहा है, जो कभी-कभी उनकी वास्तविक पहचान और मूल्य प्रणाली से भटक सकता है* [5]।

राजनीतिक और सामाजिक चेतना में वृद्धि

डिजिटल मीडिया ने नागरिकों को अधिक सजग और मुखर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले जहां नागरिक अपने विचारों और विरोध को सीमित माध्यमों के माध्यम से व्यक्त करते थे, वहीं अब डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से वे अपनी आवाज़ को न केवल अपने देश में, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी फैलाने में सक्षम हैं। यह परिवर्तन सामाजिक और राजनीतिक चेतना में एक बड़ी वृद्धि का कारण बना है, जिससे लोग अब अपने अधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए अधिक सक्रिय रूप से आवाज़ उठाने लगे हैं।

सामाजिक आंदोलनों ने डिजिटल मीडिया के माध्यम से एक नया रूप लिया है, जैसे कि 'मी टू' (#MeToo), 'ब्लैक लाइव्स मैटर' (#BlackLivesMatter), और भारत में 'सीएए विरोध' (CAA Protest) जैसे आंदोलन। इन आंदोलनों ने सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के जरिए व्यापक जन समर्थन प्राप्त किया और समाज में महत्वपूर्ण बदलावों के लिए दबाव बनाया। उदाहरण के लिए, 'मी टू' आंदोलन ने महिलाओं के खिलाफ यौन शोषण के खिलाफ वैश्विक स्तर पर जागरूकता फैलाई और सामाजिक न्याय के मुद्दे पर गहरी चर्चा शुरू की। इसी प्रकार, 'ब्लैक लाइव्स मैटर' आंदोलन ने नस्लीय असमानता और पुलिस बर्बरता के

खिलाफ आवाज़ उठाई, और 'सीएए विरोध' ने भारतीय नागरिकता कानूनों को लेकर गहरी चिंता और विरोध को उत्पन्न किया।

डिजिटल मीडिया ने इन आंदोलनों को वैश्विक मंच पर फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे सामाजिक न्याय, अधिकारों और समानता के लिए संघर्ष करने की नई संभावनाएं पैदा हुई हैं। इससे यह भी स्पष्ट हुआ है कि *अब सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन केवल पारंपरिक तरीकों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि डिजिटल तकनीकों ने उन्हें अधिक सशक्त और प्रभावशाली बना दिया है* [6]।

नकारात्मक प्रभाव

जहां एक ओर डिजिटल मीडिया ने सशक्तिकरण, सूचना के प्रसार और सामाजिक जुड़ाव में वृद्धि की है, वहीं दूसरी ओर इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। सबसे प्रमुख समस्याओं में फेक न्यूज़, साइबर बुलिंग, ट्रोलिंग, गोपनीयता का उल्लंघन और डिजिटल एडिक्शन शामिल हैं। फेक न्यूज़ के माध्यम से गलत सूचना का प्रसार बहुत तेजी से होता है, जो समाज में भ्रम और डर फैलाता है। साइबर बुलिंग और ट्रोलिंग ने युवाओं और कमजोर वर्गों के लिए मानसिक दबाव बढ़ा दिया है, जिससे कई बार आत्महत्या जैसे गंभीर परिणाम सामने आते हैं।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल मीडिया के अत्यधिक उपयोग ने गोपनीयता के उल्लंघन को बढ़ावा दिया है। *लोग अपनी निजी जानकारी सोशल मीडिया पर साझा करते हैं, जिससे उनकी गोपनीयता खतरे में पड़ जाती है। डिजिटल एडिक्शन, यानी इंटरनेट और सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय बिताना, लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, जिससे अवसाद, चिंता और अकेलापन जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इन सभी नकारात्मक प्रभावों ने सामाजिक सौहार्द, मानसिक स्वास्थ्य और आपसी विश्वास को भी प्रभावित किया है, जो समाज की समग्र कल्याण के लिए खतरनाक साबित हो सकते हैं* [7]।

पारंपरिक बनाम आधुनिक सामाजिक व्यवहार

पारंपरिक सामाजिक व्यवहार में भौतिक उपस्थिति और आमने-सामने के संवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। पहले सामाजिक आयोजनों में लोग एक-दूसरे से मिलने, बातचीत करने और साझा समय बिताने के लिए इकट्ठा होते थे। विवाह, त्यौहार या अन्य सामाजिक आयोजनों में परिवार और मित्रों का मिलना एक सजीव और भावनात्मक अनुभव होता था। हालांकि, डिजिटल युग में इस सामाजिक परंपरा में बदलाव आया है। अब वर्चुअल कार्यक्रमों ने इन भौतिक आयोजनों की जगह ले ली है। वीडियो कॉल्स,

सोशल मीडिया, और डिजिटल मंचों के माध्यम से लोग अब अधिकतर समय एक-दूसरे से ऑनलाइन संपर्क करते हैं, और त्यौहारों की बधाई से लेकर शादी की सूचनाएं भी अब डिजिटल प्लेटफार्मों पर दी जाती हैं।

इस बदलाव ने सामाजिकता की प्रकृति को पूरी तरह से बदल दिया है। *अब व्यक्तिगत संपर्क की बजाय व्यक्ति केंद्रित व्यवहार अधिक देखने को मिल रहा है। लोग अब अपनी सामाजिक पहचान को डिजिटल माध्यमों के द्वारा व्यक्त करते हैं, और उनका फोकस अधिकतर अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों और अनुभवों पर होता है। इस बदलाव से पारंपरिक सामूहिकता और सामूहिक आयोजनों की भावना में कमी आई है, जिससे समुदाय आधारित जुड़ाव की जगह व्यक्तिगत, डिजिटल जुड़ाव ने ले ली है* [8]।

महिला सशक्तिकरण में भूमिका

डिजिटल मीडिया ने महिलाओं के लिए एक नया मंच प्रदान किया है, जिससे वे अपनी आवाज़ उठा सकती हैं और अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा कर सकती हैं। सोशल मीडिया, ब्लॉग्स, और अन्य डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स ने महिलाओं को एक मंच दिया है जहाँ वे अपने अधिकारों, सामाजिक मुद्दों और लैंगिक समानता के बारे में खुलकर बात कर सकती हैं। इससे न केवल महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है, बल्कि उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है। उदाहरण के लिए, 'मी टू' (#MeToo) आंदोलन ने महिलाओं को यौन शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ आवाज़ उठाने की प्रेरणा दी और एक वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता के मुद्दे को उजागर किया।

हालांकि, डिजिटल मीडिया ने महिलाओं के लिए सशक्तिकरण के कई अवसर खोले हैं, वहीं इसे लेकर कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं। *महिलाओं को ऑनलाइन उत्पीड़न, साइबर बुलिंग, और ट्रोलिंग का सामना अधिक करना पड़ता है। सोशल मीडिया पर महिलाओं को अपमानजनक टिप्पणियों और यौन उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है, जिससे उनकी मानसिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, जबकि डिजिटल मीडिया ने महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई है, इसके साथ उत्पीड़न और सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं* [9]।

भविष्य की दिशा

डिजिटल मीडिया के प्रभाव से सामाजिक व्यवहार में जो परिवर्तन आया है, वह स्थायी प्रकृति का प्रतीत होता है। आज के समय में जहां लोग अपनी अधिकांश गतिविधियाँ डिजिटल माध्यमों के जरिए करते हैं, यह बदलाव आने वाले समय में और भी अधिक गहरा हो सकता है। विशेष रूप से, 'वर्चुअल रियलिटी'

(VR), 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (AI), और 'मेटावर्स' जैसी नई तकनीकों के विकास के साथ सामाजिक व्यवहार और भी अधिक डिजिटल और आभासी हो जाएगा। ये तकनीकें लोगों के आपसी संवाद, कार्य करने के तरीके और जीवनशैली में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती हैं। उदाहरण के लिए, मेटावर्स के माध्यम से लोग वर्चुअल दुनिया में एक दूसरे से संपर्क कर सकते हैं और अपनी गतिविधियाँ पूरी कर सकते हैं, जिससे शारीरिक सीमाएँ समाप्त हो सकती हैं।

हालांकि, यह जरूरी है कि इस परिवर्तन को संतुलित, मानवीय और नैतिक दृष्टिकोण से समझा जाए। *डिजिटल तकनीकों का बढ़ता प्रभाव समाज में असमानताएँ और अन्य नकारात्मक प्रभाव भी ला सकता है। इसलिए यह आवश्यक होगा कि हम इन नई तकनीकों के उपयोग में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी बनाए रखें, ताकि उनका सकारात्मक प्रभाव सामाजिक सशक्तिकरण और समृद्धि में योगदान दे सके* [10]।

निष्कर्ष

डिजिटल मीडिया ने समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं। इसने न केवल जानकारी के आदान-प्रदान को त्वरित और सुलभ बनाया, बल्कि अभिव्यक्ति के नए तरीके भी प्रदान किए हैं। लोग अब सोशल मीडिया, ब्लॉग्स, और अन्य डिजिटल प्लेटफार्म्स के माध्यम से अपनी आवाज़ उठा सकते हैं और दुनिया भर में संपर्क स्थापित कर सकते हैं। यह जुड़ाव और संवाद के नए अवसर उत्पन्न करता है, जिससे व्यक्ति को अपनी सोच और विचार साझा करने की अधिक स्वतंत्रता मिलती है।

हालांकि, इस प्रगति के साथ कुछ नकारात्मक पहलू भी जुड़े हैं। डिजिटल मीडिया ने पारंपरिक संबंधों की गहराई और आत्मीयता को प्रभावित किया है, और इससे सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक पहचान पर भी संकट उत्पन्न हुआ है। लोग अब डिजिटल माध्यमों के द्वारा जुड़ रहे हैं, लेकिन इसमें वास्तविक भावनात्मक जुड़ाव की कमी हो सकती है। इसके अलावा, ऑनलाइन उत्पीड़न, गोपनीयता का उल्लंघन, और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं।

इसलिए, यह अत्यंत आवश्यक है कि हम डिजिटल मीडिया का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से करें, ताकि इसके सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाते हुए, सामाजिक जीवन में सामंजस्य और संतुलन बनाए रखा जा सके।

संदर्भ सूची

[1]. *कैस्टेल्स, एम. (2009). कमीुनिकेशन पावर (पृ. 112-130). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।*

[2]. *मैनोविच, एल. (2013). सॉफ़्टवेयर टेक्स कमांड (पृ. 87-105). ब्लूम्सबरी एकेडेमिक।*

[3]. *बॉयड, डी. (2014). इट्स कांप्लिकेटेड: द सोशल लाइफ्स ऑफ नेटवर्कड टीन्स (पृ. 98-115). येल यूनिवर्सिटी प्रेस।*

[4]. *टरकल, एस. (2015). रीक्लेमिंग कंवर्सेशन: द पावर ऑफ टॉक इन ए डिजिटल एज (पृ. 45-60). पेंगुइन प्रेस।*

[5]. *जेनकिंस, एच., फोर्ड, एस., & ग्रीन, जे. (2013). स्प्रेडेबल मीडिया: क्रिएटिंग वैल्यू एंड मीनिंग इन ए नेटवर्क्ड कल्चर (पृ. 73-90). न्यू यॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस।*

[6]. *मैक्लुहान, एम. (1964). अंडरस्टैंडिंग मीडिया: द एक्सटेंशंस ऑफ मैन (पृ. 51-66). मैकग्रा-हिल।*

[7]. *तुफेकी, ज़. (2017). ट्विटर एंड टियर गैस: द पावर एंड फ्रैजिलिटी ऑफ नेटवर्कड प्रोटेस्ट (पृ. 204-225). येल यूनिवर्सिटी प्रेस।*

[8]. *टरकल, एस. (2011). अलोन टुगेदर: व्हाई वी एक्सपेक्ट मोर फ्रॉम टेक्नोलॉजी एंड लेस फ्रॉम इच अदर (पृ. 78-95). बेसिक बुक्स।*

[9]. *वान डाइक, जे. (2012). द नेटवर्क सोसाइटी: सोशल एस्पेक्ट्स ऑफ न्यू मीडिया (पृ. 110-130). सेज़।*

[10]. *कॉटल, एस. (2008). ग्लोबल मीडिया एंड कम्युनिकेशन: अ क्रिटिकल इंट्रोडक्शन (पृ. 145-160). सेज़ पब्लिकेशंस।*

Cite this Article

डॉ. लखविंदर सिंह, "**डिजिटल मीडिया के प्रभाव से सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन**", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 3, pp. 15-22, March 2025.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i3.117*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.